अध्याय
11

# सवैये

© JCERT not to be republished

## रासखान

# कवि-परिचय:-

**लेखिका परिचय**

- रासखान
- मूल नाम- सैयद इब्राहिम
- जन्म- 1548 ई
  जन्म-स्थान- दिल्ली के आस पास
- मृत्यु- 1628 ई के लगभग
- दीक्षा गुरु- गोस्वामी विट्ठलनाथ
- प्रमुख रचनाएँ- सुजान रसखान, प्रेम वाटिका
- भाषा- ब्रजभाषा
- भक्ति काल के कृष्ण-भक्त कवि
- कृष्ण-भक्ति, ब्रज की महिमा, राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का गायन

© JCERT not to be republished

# पाठ-परिचय:-

पाठ परिचय

सवैये

इस पाठ में चार सवैये दिए गए हैं।

पहले सवैये में रसखान ने ब्रजभूमि के प्रति अनन्य प्रेम की भावना को व्यक्त किया है।

रसखान अगला जन्म यदि मनुष्य के रूप में हो तो गोकुल के ग्वालों के बीच, पशु हो तो नंद के गायों के बीच, पत्थर हो तो गोवर्धन पर्वत में और पक्षी हो तो जमुना किनारे कदम की डालों में लेना चाहता है।

दूसरे सवैया में रसखान कृष्ण की लाठी और कंबल पर तीनों लोक, नंद की गायों को चराने के लिए आठों-सिद्धि और नवनिधि के सुखों को भी छोड़ने के लिए तैयार है।

दी रसखान अपनी आँखों से गोकुल के वनों, बागों तालाबों और जंगल के काँटेदार झाड़ियों के दर्शन के लिए करोड़ों सोने की महलों को त्यागने की इच्छा व्यक्त किए हैं।

तीसरे सवैये में भगवान श्रीकृष्ण के रूप- सौन्दर्य का चित्रण हुआ है। कृष्ण का अपने सिर पर मोर पंख, गले में फूलों की माला, अंग में पीला वस्त्र धारण कर और हाथ में लाठी लेकर गायों और गोपियों के संग वन में घूमने की बात कही गई है।

गोपियां श्री कृष्ण के सभी रूपों को धारण करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उनके मुरली अपने होठों पर कभी भी धारण नहीं करना चाहती है।

दी चौथे सवैये में कृष्ण के मुरली की मधुर- ध्वनि का चित्रण हुआ है। मुरली की मधुर तान को सुनकर गोपियों का अपने कान में अंगुली डालने, गायों को छत पर चढ़कर गाने और गोपियों द्वारा कृष्ण की मधुर मुस्कान को संभाल नहीं पाने की बात कही गई है।

उपर्युक्त बातों से गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम की भावना का पता चलता है।

© JCERT not to be republished

# सप्रसंग-व्याख्या :

## काव्यांश-1

1* मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।

जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मंझारन ।।

पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन ।

जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिली कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

2* शब्दार्थ:- बसौं = बसना। कहा बस = बस में न होना। धेनु = गाय। मंझारन = बीच में। पाहन = पत्थर। गिरि =पर्वत। पुरंदर= इंद्र। कालिंदी= यमुना नदी। खग =पक्षी

3* प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज- भाग 1 में संकलित रसखान की कविता सवैये से ली गई है। इस सवैये में कृष्ण-भक्त कवि रसखान का कृष्ण एवं ब्रजभूमि के प्रति अनन्य भक्ति एवं प्रेम की भावना का चित्रण हुआ है।

4* व्याख्या:- कवि रसखान अपने आराध्य देव श्री कृष्ण एवं ब्रजभूमि (गोकुल) के प्रति गहरे प्रेम को व्यक्त किया है। कवि कहते हैं कि यदि मुझे अगला जन्म मनुष्य के रूप में मिले तो गोकुल के गाँव के ग्वालों के बीच मिले। यदि पशु के रूप में जन्म मिले तो नंद के गायों के बीच विचरण करुँ। पत्थर बनूँ तो गोवर्धन पर्वत का अंश बनूँ जिसे भगवान श्री कृष्ण अपनी तर्जनी अंगुली पर धारण कर ब्रजवासियों को इंद्र के क्रोध से बचाये थे और यादि पक्षी बनूँ तो यमुना किनारे कदंब की डालों पर अपना बसेरा करूँ। वह हर हाल में गोकुल में ही जन्म लेना चाहते हैं जिससे श्री कृष्ण का सान्निध्य उन्हें मिलता रहे।

5* विशेष:-

(क) इस सवैया में कवि रसखान का कृष्ण और ब्रज- भूमि के प्रति गहरे प्रेम की अभिव्यंजना हुई है।

(ख) कविता में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(ग) सवैया छंद के सुंदर प्रयोग से कविता में संगीतात्मकता आ गई है।

(घ) गोकुल गाँव, नित नंद, कालिंदी कूल कदम में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

## काव्यांश- 2

1* या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवों निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं।।

रसखान कबौ इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

2* शब्दार्थ:- लकुटी = लाठी। कमरिया = कंबल। तड़ाग = तालाब। कलधौत = सोना-चांदी। धाम = महल। करील = काँटेदार झाड़ी। वारौं = न्योछावर करना, त्याग देना। कोटिक = करोड़ों।

© JCERT not to be republished

3* प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-1 में संकलित रसखान की कविता 'सवैये' से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि रसखान का कृष्ण और कृष्ण-भूमि गोकुल के प्रति अनन्य भक्ति और प्रेम-भाव का चित्रण हुआ है।

4* व्याख्या- कवि रसखान श्री कृष्ण की लाठी और कंबल को पाने के लिए तीनों लोकों का राज त्यागने के लिए तैयार हैं। नंद की गायों को चराने के लिए आठों सिद्धी और नव नावों-निधि के सुख को भी छोड़ देंगे। अपनी इन आँखों से ब्रज के वन, बाग, तालाब आदि को जीवन भर देखते रहना चाहते हैं। वह ब्रजभूमि गोकुल के जंगल के काँटेदार झाड़ियों के दर्शन के लिए सोने-चांदी के करोड़ों महल को भी न्योछावर करने के लिए तैयार हैं।

5* विशेष-

(क) इन पंक्तियों में रसखान का कृष्ण और कृष्णभूमि के प्रति अनन्य भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति हुई है।

(ख) कविता में ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(ग) सवैया छंद के प्रयोग से कविता में संगीतात्मकता आ गई है।

(घ) नव निधि, बन बाग, करील के कुंजन में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

## काव्यांश-3

1* मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।

ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी ।।

भावतो वोही मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

2* शब्दार्थ:- गूंज की माल = वन के फूलों की माला। पहिरौंगी = पहनूँगी। लकुटी = लाठी। गोधन = गायें। ग्वारिन = गोपियाँ। भावतो = अच्छा लगना। स्वाँग = रूप धारण करना। मुरलीधर = कृष्ण।

3* प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग -1 में संकलित रसखान की कविता 'सवैये' से उद्धृत है। इस कविता में कृष्ण के रूप सौंदर्य का और गोपियों का कृष्ण के मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव का बड़ा ही सुंदर चित्रण हुआ है।

4* व्याख्या:- कवि रसखान कहते हैं कि एक गोपी दूसरे सखी से कह रही है कि तेरे कहने पर कृष्ण का मनमोहक रूप धारण करने के लिए मैं अपने सिर पर मोरपंख धारण करूँगी, गले में वन के फूलों की माला पहनूंगी। अंग (शरीर) में पीला वस्त्र ओढ़ कर गायों और गोपियों के संग वन में घूमने-फिरने का स्वाँग (रूप धारण) करूंगी, किंतु कृष्ण के होठों पर हमेशा रहने वाली और हम सभी गोपियों के हृदय को जलाने वाली हमारी सौतन कृष्ण की मुरली को मैं अपने होठों पर कभी नहीं धारण करूँगी।

© JCERT not to be republished

5* विशेष : -

(क) इस काव्यांश में भगवान कृष्ण के रूप सौंदर्य का बड़ा ही सुंदर चित्रण हुआ है।

(ख) गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौतन मानती हैं।

(ग) कविता में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(घ) सवैया छंद के प्रयोग से कविता संगीतमय बन गई है।

(ड*) इन पंक्तियों में लै लकुटी, गोधन ग्वारिन, सब स्वाँग में अनुप्रास अलंकार का बहुत ही सुंदर प्रयोग हुआ है।

## काव्यांश – 4

1* काननी दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनी मंद बजैहै।

मोहिनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।।

टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

माइ री वा मुख की मुस्कानि सम्हारी न जैहै न जैहै न जैहै ।।

2* शब्दार्थ:- काननि = कानों में। मंद = धीरे। तानन = धुन। अटा = अट्टालिका, छत। गोधन = गायें। टेरि = पुकारना। ब्रजलोगनि = ब्रज के लोग। सिगरे = सभी।

3* प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग-1 में संकलित रसखान की कविता 'सवैये' से ली गई है। इन पंक्तियों में श्री कृष्ण के मुरली की मधुर-धुन और उसकी मधुर-मुस्कान का सुंदर चित्रण हुआ है।

4. व्याख्या:- कवि रसखान कहते हैं कि गोपियां कह रही हैं कि जब कृष्ण मुरली की मधुर-मधुर धुन बजाने लगेंगे तब हम लोग अपनी कानों में अंगुली रख लेंगे, भले ही मुरली की मोहिनी धुन को सुनकर सभी गायें छतों पर चढ़कर गाने लगें। लेकिन गोपियों को इस बात का ठभी डर है कि जब श्री कृष्ण मुरली बजाते वक्त मंद-मंद मुसकुरायेंगे तब उनकी मधुर-मुस्कान को हम लोग संभाल नहीं पाएंगे और न चाहते हुए भी हम लोग उनकी ओर खींची चली जाएंगे।

5. विशेष:-

(क) इन पंक्तियों में कृष्ण की मुरली की मधुर-धुन और मधुर-मुस्कान का सुंदर चित्रण हुआ है।

(ख) इन पंक्तियों में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(ग) सवैया छंद के प्रयोग से कविता संगीतमय है।

(घ) गोधन गैहै तो गैहै में अनुप्रास और पुनरुक्ति — प्रकाश, काल्हि कोऊ कितनों में अनुप्रास तथा न जैहै न जैहै न जैहै में अनुप्रास एवं पुनुरूक्ति-प्रकाश अलंकार है।

# प्रश्न- उत्तर :-

**1. ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?**

उत्तर- ब्रजभूमि के प्रति कवि रसखान का प्रेम विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुआ है।

कृष्ण से जुड़ी स्मृतियों के कारण ब्रज के ग्वालों, गायों, पत्थर, पक्षी आदि से कवि का लगाव हो गया है। इसलिए कवि की इच्छा है कि उन्हें अगला जन्म चाहे मनुष्य के रूप में मिले तो गोकुल के ग्वालों के बीच, पशु के रूप में मिले तो नंद के गायों के बीच मिले, पत्थर बने तो गोवर्धन पर्वत का अंश बने और अगर पक्षी के रूप में जन्म मिले तो यमुना किनारे कदम की डालों में मिले, जिससे उन्हें कृष्ण का सान्निध्य मिलता रहे। कवि ब्रजभूमि के लिए संसार के सभी निधियों को भी त्याग देना चाहते हैं।

**2. कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है ?**

उत्तर- कवि रसखान को कृष्ण से जुड़ी ब्रज के प्राकृतिक सौंदर्य और प्रत्येक वस्तुओं से प्रेम हो गया था। ब्रज के वनों, बागों और तालाबों पर कृष्ण की लीलाओं से जुड़ी मधुर स्मृतियां है। इसलिए कवि ब्रज के वन, बाग और तालाब को जीवन-भर निहारते रहना चाहते हैं, जिससे कृष्ण का सान्निध्य उन्हें मिलता रहे।

**3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?**

उत्तर- कवि को कृष्ण तथा कृष्ण-भूमि से जुड़ी प्रत्येक वस्तुओं से अत्यधिक प्रेम है। कृष्ण अपनी गायों को चराने के लिए लकुटी और कमरिया हमेशा अपने साथ रखते थे। इसलिए कवि कृष्ण का सान्निध्य पाने के लिए उनकी लकुटी और कामरिया पर सब कुछ तथा तीनों लोकों का राज्य-सुख को न्योछावर कर देना चाहते हैं।

**4. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।**

उत्तर- सखी नें गोपी से वैसा ही रूप धारण करने को कहती हैं जैसा कि कृष्ण का मनमोहक रूप है। सखी नें गोपी से सिर पर मोरपंख का मुकुट, गले में वन के फूलों की माला, तन पर पीला-वस्त्र तथा हाथ में लाठी लेकर गायों को चराने का रूप धारण करने के लिए कह रही है, किंतु कृष्ण के होठों पर हमेशा रहने वाली मुरली को अपनी होठों पर कभी नहीं धारण करने का आग्रह करती है ।

**5. आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों पाना चाहते है ?**

उत्तर- कवि का भगवान श्री कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति एवं प्रेम की भावना थी। इसलिए कवि भगवान कृष्ण के सान्निध्य को पाने के लिए उसकी लीला-भूमि ब्रज में जन्म लेने की इच्छा व्यक्त करते हैं। ब्रजभूमि में पशु, पक्षी और पहाड़ा में से किसी भी रूप में जन्म लेने

© JCERT not to be republished

में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करते हैं, उन्हें बस जीवन-भर कृष्ण का सान्निध्य मिलता रहे।

### 6. चौथे सवैये के अनुसार गोपियां अपने आप को क्यों विवश पाती है ?

उत्तर- कृष्ण का रूप अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। कृष्ण के मुरली की मधुर-धुन तो अत्यंत चिताकर्षक होती है। कृष्ण की मधुर-मुस्कान भी अत्यंत मनमोहक है। इन दोनों से बच पाना गोपियों के लिए अत्यंत कठिन है। न चाहते हुए भी गोपियां कृष्ण के मुरली की मधुर-धुन को सुनने के लिए विवश हो जाती हैं। कृष्ण की मन्द-मन्द मुस्कान को गोपियां संभाल नहीं पाती हैं। उसकी मधुर-मुस्कान से गोपियाँ अपना घर-द्वार, लोक-लाज, समाज आदि सब कुछ छोड़-छाड़कर उसकी ओर खींची चली जाने के लिए विवश हो जाती हैं।

### 7. भाव स्पष्ट कीजिए:-

(ख) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि रसखान कहते हैं कि ब्रजभूमि की काँटेदार झाड़ियों के दर्शन के लिए करोड़ों सोने की महलों को भी न्योछावर करने के लिए तैयार हूँ। इन कुंजों एवं काँटेदार झाड़ियों से कृष्ण की स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। ब्रज की प्राकृतिक सुंदरता को देखने में जो सुख मिलता है, वह सुख सोने चांदी के महलों में भी नहीं मिलता है।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्भारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर- इस पंक्ति में कवि रसखान कहते हैं कि कृष्ण की मुस्कान इतना मनमोहक है कि गोपियाँ अपने आप को संभाल नहीं पाती हैं। कृष्ण की मधुर मुस्कान पर गोपियाँ घर-द्वार, लोक-लाज और समाज अपना सब कुछ भूल कर कृष्ण की ओर खींची चली जाती हैं ।

### 8. 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है ।

उत्तर- इस पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति बार-बार होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

### 9. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

"या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।"

उत्तर- भाव-सौंदर्य:- एक गोपी अपने सखी के कहने पर कृष्ण के हर रूप को धारण करने के लिए तैयार हैं, किंतु कृष्ण के होठों पर हमेशा रहने वाली मुरली को अपने होठों पर धारण करने को तैयार नहीं है। गोपियों के लिए मुरली सौतन के समान है। इसलिए मुरली के प्रति गोपियों के मन में ईर्ष्या की भावना प्रबल हो उठी है। वे अपनी सौतन मुरली को अपने होठों पर धारण नहीं करना चाहती हैं।

काव्य-सौंदर्य:- इस पंक्ति में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। सवैया छंद के सुंदर प्रयोग से कविता संगीतमय है। 'म' और 'ल' वर्ण की आवृत्ति बार-बार होने से कविता में अनुप्रास अलंकार है, जिससे कविता की सुंदरता बढ़ गई है।

© JCERT not to be republished

**रचना और अभिव्यक्ति:-**

**10. प्रस्तुत सवैयों में जिस प्रकार ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है, उसी तरह आप अपनी मातृभूमि के प्रति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कीजिए।**

उत्तर- मुझे भी अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम है। जिस भूमि पर मैंने जन्म लिया है, जहाँ की मिट्टी का अन्न खा कर मैं बड़ा हुआ हूँ, जिस मिट्टी में खेला-कूदा हूँ, जहाँ की हवा को सांस लेकर मैं जीवित हूँ, उस मिट्टी के लिए, अपनी मातृभूमि के लिए मैं अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हूँ। मैं अपनी मातृभूमि की गौरवशाली-महिमा को बनाए रखने के लिए तथा अपने देश का विकास के लिए जीवन-भर प्रयास करूँगा।

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

**1. रसखान किसके भक्त थे?**

A. कृष्ण

B. राम

C. शिव

D. दुर्गा

उत्तर- A* कृष्ण

**2. रसखान की रचनाओं में किस भाषा की प्रधानता है?**

A. मैथिली

B. अवधी

C. ब्रज

D. खड़ी बोली

उत्तर- C. ब्रज

**3. कवि किस पर्वत पर पत्थर बनकर जन्म लेना चाहता है?**

A. विंध्याचल

B. मैनाक

C. गोवर्धन

D. हिमालय

उत्तर- C. गोवर्धन

**4. 'कालिंदी' किस का नाम है?**

A. राधा

B. यमुना

C. यशोदा

D. देवकी

उत्तर- B* यमुना

**5. 'मोरपखा सिर ऊपर राखिहै' सवैये में किसके रूप का अनुकरण करने का वर्णन है?**

A. राधा

B. कृष्ण

C. शिव

D. राम

उत्तर- B* कृष्ण

© JCERT not to be republished

**6. गोपी कृष्ण की मुरली को किस कारण अपने होंठों से नहीं लगाना चाहती?**

A. जूठी होने के कारण

B. उन्हें पसंद नहीं है

C. सौतिया भाव के कारण

D. उन्हें मुरली बजानी नहीं आती

उत्तर- C* सौतिया भाव के कारण

**7. गोपी किस की माला गले में पहनना चाहती है?**

A. मुंज

B. गुंज

C. मूंगा

D. हीरे की

उत्तर- B* गुंज

**8. गोपी क्या नहीं संभाल पा रही? .**

A. अपना मन

B. कृष्ण की भेंट

C. कृष्ण के मुख की मुसकान

D. कृष्ण की गऊएँ

उत्तर-C* कृष्ण के मुख की मुस्कान

**9. 'टेरि' का क्या अर्थ है?**

A. टटोलना

B. पुकारना

C. टिकाना

D. ठिकाना

उत्तर-B* पुकारना

**10. 'पुरंदर' कौन था?**

A. कुबेर

B. यमराज

C. इंद्र

D. वायु

उत्तर-C* इंद्र

**11. कवि ने कंबल के लिए कौन-सा शब्द प्रयोग किया है?**

A. कमर

B. कामरिया

C. कंबलिया

D. कामरी

उत्तर-B* कामरिया

**12. 'तड़ाग' क्या होता है?**

A. झरना

B. समुद्र

C. झील

D. तालाब

उत्तर-D* तालाब

**13. 'कलधौत के धाम' में 'कलधौत' क्या है?**

A. सोना

B. हीरा

© JCERT not to be republished

C. चाँदी

D. मोती

उत्तर–A. सोना

**14. 'मँझारन' शब्द का अर्थ है –**

A. मँझधार

B. बीच में

C. मयान पर

D. महलों में

उत्तर–. बीच में

**15. रसखान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

A. 1555 में इलाहाबाद में

B. 1548 में दिल्ली में

C. 1545 में मुम्बई में

D. 1540 में राँची में

उत्तर – B. 1548 में दिल्ली में

**16. रसखान की मृत्यु कब हुई थी?**

A. 1618 के लगभग

B. 1648 के लगभग

C. 1628 के लगभग

D. 1638 के लगभग

उत्तर – C. 1628 के लगभग

**17. निम्नलिखित निम्न में से कौन-कौन सी रचना रसखान की हैं ?**

A. सुजान रसखान और प्रेम वाटिका

B. साखी और सबद

C. रामचरितमानस और कवितावली

D. कामायनी और आंसू

उत्तर – A. सुजान रसखान और प्रेम वाटिका

© JCERT not to be republished